Course- B.A.- I

Subject- Ancient History

Paper- I (Political History of India 600 B.C. -550 A.D.)

Topic- **Rice of Magadha:** Factors, Contribution of Haryank, **Shishunaga and Nanda Dynasties**
**शीर्षक- शिशुनाग एवं नन्द वंश**

Prepared by
**Dr. Manindra Yadav**

## शिशुनाग वंश (412–344 ई0पू0)

**शिशुनाग (412–394 ई0पू0)**– शिशुनाग भी नागवंश से सम्बन्धित था। यह अंतिम हर्यंक वंशी शासक नागदाशक का प्रधान सेनापति था।

**महावंशटीका**– इस ग्रन्थ में शिशुनाग को लिच्छवी राजा की वेश्या पत्नी से उत्पन्न बताया गया है।

**पुराण**– शिशुनाग को क्षत्रिय बताते हैं।

पुराण में उल्लेख है–

**अष्टत्रिंशच्छतम् भव्याः प्रद्योताः पंच ते सुताः।**
**हत्वा तेषां यशः कृत्स्नं शिशुनागा भविष्यति।**
**वाराणस्यां सुतं स्थाप्य श्रयिष्यति गिरिब्रजम्।।**

'पाँच प्रद्योत पुत्र 138 वर्ष तक शासन करेंगे उन सबको मारकर शिशुनाग राजा होगा, अपने पुत्र को वाराणसी का राजा बनाकर गिरिव्रज को प्रस्थान करेगा।' इस तथ्य से स्पष्ट होता है की शिशुनाग ने अवन्ति राज्य को जीतकर मगध साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। इस प्रकार वत्स भी मगध साम्राज्य के अधीन हो गया क्योंकि वत्स अवन्ति के अधीन था।

- अवन्ति पर अधिकार हो जाने से पाटलीपुत्र को पश्चिमी देशों के साथ व्यापार–वाणिज्य के लिए एक नया मार्ग प्राप्त हुआ। यह मार्ग पाटलिपुत्र से वत्स तथा अवन्ति होते हुए भड़ौच तक जाता था।
- शिशुनाग ने गिरिव्रज के अतिरिक्त वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनायी। दूसरी राजधानी का निर्माण वज्जियों पर नियन्त्रण रखने के लिए किया गया था।

**कालाशोक (काकवर्ण) 394–366 ई0पू0–** पुराणों में इसे काकवर्ण कहा गया है। कालाशोक ने पुनः राजधानी वैशाली से पाटलिपुत्र स्थानान्तरित कर दी। इसके बाद पाटलपिुत्र ही मगध की राजधानी बनी रही।

- कालाशोक के शासनकाल में वैशाली में **द्वितीय बौद्ध संगीति** का आयोजन किया गया। जिसमें बौद्ध संघ स्पष्टतः दो सम्प्रदायों में बंट गया–
  **स्थविर–** परम्परागत नियमों में आस्था रखने वाले।
  **महासंघिक–** परम्परागत नियमों में कुछ नए नियमों को समाविष्ट करने वाले।
- बाणभट्ट के हर्षचरित से पता चलता है– (**काकवर्णः शैशुनागिः नगरोपकण्ठे निचकृते निस्त्रिंशेन।**) कालाशोक की राजधानी के समीप घूमते समय एक व्यक्ति ने इसकी हत्या कर दी। इस हत्यारे की पहचान नन्द वंश के महापद्मनन्द से की जाती है।
- पुराणों के अनुसार कालाशोक के 10 पुत्रों ने 22 वर्षों तक शासन किया। इस वंश का अंतिम शासक नन्दीवर्धन अथवा महानन्दीन हुआ। 344 ई0पू0 के आस–पास इस वंश का अंत हो गया।

# नन्द वंश (344–324/23) ई0पू0

❖ शिशुनाग वंश का अंत करके जिस व्यक्ति ने नन्द वंश की नींव रखी वह निम्न कुल में उत्पन्न हुआ था। विभिन्न ग्रन्थों में उसका नाम अलग–अलग मिलता है–

**पुराण**–पुराणों में इसे

**महानन्दी सुतश्चापिशूद्रायां कलिकांशजः।**
**उत्पस्यते महापद्मो सर्वक्षत्रान्तको नृपः।।**
**एकराट् स महापद्म एकक्षत्रो भविष्यति।**
**स एकछत्रं पृथ्वी अनुलंघितशासनः।**
**स्थास्यति महापद्मो द्वितीय इव भार्गव।।**

**महापद्म, कलि का अंश** कहा गया है। यह अत्यन्त लोभी तथा बलवान एवं दूसरे परशुराम के समान सभी क्षत्रियों का विनाश करने वाला **(सर्वक्षत्रान्तक)** कहा गया है। पुराणों में इसे अन्तिम शिशुनाग वंशीय शासक महानन्दिन की शूद्रा पत्नी से उत्पन्न बताया गया है। इसने अपने समकालीन सभी राज्यों को पराजित करके एकक्षत्र शासन स्थापित किया तथा **एकराट्** की उपाधि धारण की।

**बौद्ध ग्रन्थ महाबोधिवंश** – उग्रसेन

**महावंश –** अज्ञात कुल का, डाकुओं के गिरोह का मुखिया आदि कहा गया है।

**जैन ग्रन्थ परिशिष्टपर्वन** – नापित पिता और वेश्या माता का पुत्र था।

**यूनानि लेखक–कर्टियस एवं डायोडोरस** दोनों ही **अग्रमीज (धननन्द)** के पिता **(उग्रसेन)** को जाति का नाई बताते हैं। **महापद्म** सुन्दर एवं बलवान था। अतः वह रानी का प्रेम पात्र बन गया। उसने धोखे से राजा की हत्या करके सिंहासन प्राप्त किया था।

- इस प्रकार सभी साक्ष्य समवेत रूप से नन्दों को शूद्र जाति का बताते हैं।

**महापद्मनन्द की उपलब्धियां–** मत्स्य पुराण में कहा गया है–

**ऐक्ष्वाकवश्चतुर्विंशत्पांचालाः सप्तविंशतिः।**
**काशेयास्तु चतुर्विंशदष्टार्विंशति हैहयाः।।**
**कालिंगाश्चैव द्वात्रिंशत् अश्मकाः पंचविंशतिः।**
**कुरवश्चापि षट्त्रिंशत् अष्टाविंशति मैथिलाः।।**
**शूरसेनास्त्रयोविंशत् वीतिहोत्राश्चविंशतिः।**
**एते सर्वे भविष्यन्ति एककालं महीक्षितः।।**

ईक्ष्वाकु, पांचाल, काशेय, हैहय, कलिंग, अश्मक, कुरू, मैथिल, शूरसेन, वितिहोत्र आदि को महापद्मनन्द का समकालीन बताया गया है। महापद्मनन्द ने अपने समकालीन सभी राजाओं को पराजित करके एक विशाल साम्राज्य की नींव रखी जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी।

- खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में महापद्म को कलिंग का विजेता कहा गया है। इस लेख के अनुसार महाद्म **'जिनसेन' की प्रतिमा** उठा ले गया था तथा उसने **कलिंग** में एक **नहर का निर्माण** करवाया था।
- साहित्यिक साक्ष्यों के अनुसार नन्द वंश में कुल 9 राजा हुए इसीलिए इन्हें नवनन्द भी कहा जाता है। महाबोधि वंश में इनके नाम इस प्रकार मिलते हैं– **उग्रसेन (महापद्म)**, पण्डुक, पण्डुगति, भूतपाल, राष्ट्रापाल, गोतिषाणक, दशसिद्धक, कैवर्त तथा **धन**। इन 9 शासकों में 8 उग्रसेन के पुत्र थे।

**महापद्मनन्द के उत्तराधिकारी तथा नन्द सत्ता का पतन–** महापद्मनन्द के आठों पुत्रों में धननन्द सर्वाधिक शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ। यूनानि लेखक उसे **'अग्रमीज'** कहते हैं।

- इसके पास एक विशाल सेना थी जिसमें 20 हजार अश्वारोही, 2 लाख पैदल, 2 हजार रथ, तीन हजार हाथी थे। इसका सेनापति **भद्दशाल** था।

- धननन्द बहुत धनी था उसने वस्तुओं के अतिरिक्त चमड़े, वृक्ष, गोद, खानों के पत्थरों इत्यादि के उपर कर लगाकर अत्यधिक मात्रा में धन संचित किया। इसने जनता से बलपूर्वक कर वसूल किया। कहा जाता है कि उसने गंगा के भीतर एक पर्वत गुफा में 80 करोड़ की धनराशि छिपा रखी थी।
- डसने अपने समय के पसिद्ध विद्वान आचार्य चाणक्य का अपमान किया था। अतः चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य की सहायता से नन्द वंश को समूल नष्ट कर, मौर्य वंश की नींव रखी।

**नन्द शासन का महत्व–**

- सामाजिक, राजनैतिक दृष्टि से इसे निम्न वर्ग के उत्कर्ष का काल माना जाता है।
- उसने उत्तर भारत में एकछत्र शासन की स्थापना की।
- जेनोफेन के साइरोपेडिया (साइरस की जीवनी) से पता चलता है भारत का शक्तिशाली राजा पश्चिमी एशियाई देशों के झगड़ों में मध्यस्थता की इच्छा रखता था।
- उनके शासनकाल में पाटलीपुत्र शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया था। व्याकरण ग्रन्थ **अष्टाध्यायी के लेखक पाणिनि,** महापद्मनन्द के मित्र थे। पाणिनि ने पाटलीपुत्र में ही शिक्षा ग्रहण की थी। वर्ष, उपवर्ष, वररूचि, कात्यायन जैसे विद्वान नन्दों के काल में ही उत्पन्न हुये थे।
- नन्द शासक जैनमत के पोषक थे। नन्दों ने अनेक जैन मंत्रियों को नियुक्त किया था। इसमें सर्वप्रथम **कल्पक** था जिसकी सहायता से महापद्मनन्द ने समस्त क्षत्रियों का विनाश किया। धननन्द के **जैन अमात्य शाकटाल तथा स्थूलभद्र** थे।
- इनके शासनकाल में मगध प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बन गया था। तक्षशिला से प्राप्त **'आहत'** सिक्कों से पता चलता है सिकन्दर के समय मगध के सिक्के पश्चिमोत्तर भारत में बड़ी मात्रा में चलते थे। इस समय तक मगध समस्त उत्तरापथ के व्यापारिक मार्ग का स्वामी बन बैठा था।

## सन्दर्भ ग्रन्थ–


(1) श्रीवास्तव, के0सी0, 'प्राचीन भारत का इतिहास'

(2) Majumdar and Pusalkar, 'The Age of Imperial Unity'

(3) Raychaudhari, H.C., 'Political History of Ancient india'

(4) Singh, Upinder, 'A History of Ancient and Early Medieval India'